1975 My Story and last wish

Biographical sketches and My Last Wish

(Second and third articles are in Kakka’s handwriting at very different times, and the other two are by somebody else – possibly Suman?)

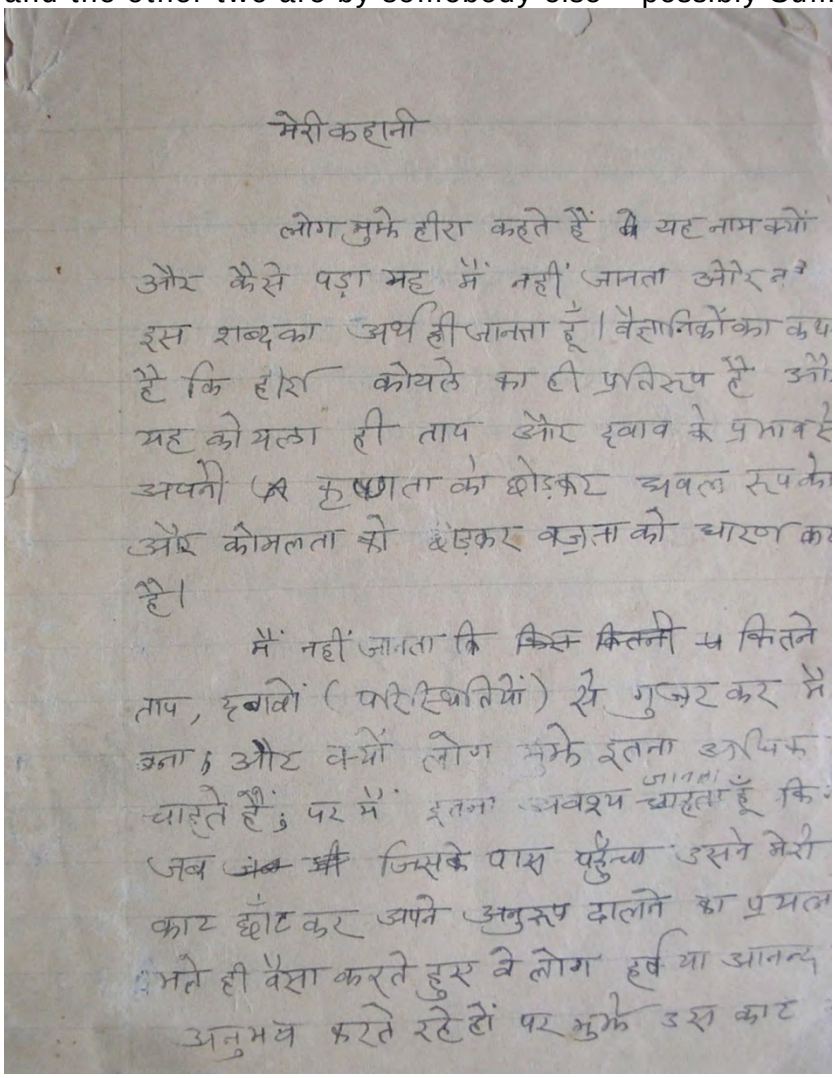

मेरी कहानी

लोग मुझे हीरा कहते हैं यह नाम क्यों
और कैसे पड़ा यह मैं नहीं जानता और न
इस शब्द का अर्थ ही जानता हूँ। वैज्ञानिकों का कथ
है कि हीरा कोयले का ही प्रतिरूप है औ
यह कोयला ही ताप और दबाव के प्रभाव से
अपनी कृष्णता को छोड़कर धवल रूप को
और कोमलता को छोड़कर वज्रता को धारण कर
है।

मैं नहीं जानता कि ~~किन कितनी~~ कितने
ताप, दबावों (परिस्थितियों) से गुजर कर मैं
बना; और क्यों लोग मुझे इतना अधिक
चाहते हैं; पर मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि
जब ~~जब~~ जिसके पास पहुँचा उसने मेरी
काट छाँट कर अपने अनुरूप ढालने का प्रयत्न
भले ही वैसा करते हुए वे लोग हर्ष या आनन्द
अनुभव करते रहे हों पर मुझे उस काट

से जैसी शारीरिक और मानसिक पीड़ा होती रही है
अन्तर्यामी के सिवाय कौन जान सकता है। मैं अपनी
थोड़ी सी जिन्दगी में बीसों मनुष्यों के हाथ बिका
सबने मुझे अपने अनुरूप ढालना चाहा पर मैं
अपनी अन्तर्व्यथा से पीड़ित ही रहा, कहीं पर
भी लेशमात्र सुख-शान्ति नहीं पा सका और हर
अवसर हाथ लगते ही उनके हाथ से निकल
भागा।

मैं अपने समग्र जीवन पर जब
एक विहङ्गम दृष्टि डालता हूँ तो मुझे अनुभव
होता है कि सुख और शान्ति तो मेरी जन्मभूमि
(कोयले की खान) के सिवाय और कहीं नसीब
नहीं और इसलिये मैंने पुनः जन्मभूमि में
ही रहने का निश्चय किया है। और मेरे (हीरा) के
लोलुपी मुझे कहीं पुनः न ले भागें इसके लिए
यह भी निश्चय किया है कि अपने चमकरूप
को छोड़कर भाई-बन्धुओं के रूप (कोयले) में ही
रहूँ जिससे कोई मुझे ढूंढ़ न सके — अर्थात्

मैं किसी के हाथ न लग सकूं।

संक्षेप में मेरी यही कहानी है। यदि पाठकों को मेरी आप बीती विस्तृत कहानी जानने की उत्सुकता होगी तो फिर कभी उनकी इच्छा पूर्ति का ~~प्रय~~ प्रयत्न करूंगा।

पं० हीरा लाल जी शास्त्री न्यायतीर्थ

आप साढूमल के निवासी हैं, श्रावण कृष्णा ३० संवत् १९६१ के दिन आपका जन्म हुआ। दुर्विपाक से १½ वर्ष की आयु में ही आपकी माँ का हैजा से अकस्मात् मरण हो गया। आपके पिता श्री दरयावसिंह मोदी ने बड़ी ममता से आपको पाला पोसा। आप पांच भाइयों में सबसे छोटे थे और उस पर माँ का वियोग, अतः सभी बड़े भाइयों का प्यार दुलार आपको मिला। दस वर्ष की आयु में जब आपने स्थानीय हाइमरी स्कूल की शिक्षा समाप्त की तो आपके मझले भैया जो घर की नाव के खिवैया थे- अपने से छोटे दो भाइयों के साथ- जो उन दिनों सर सेठ हु० दि० जैन महा विद्यालय इन्दौर में पढ़ते थे- अंग्रेजी विभाग में

भर्ती कराकर अंग्रेजी पढ़ाने के लिये इन्दौर भेजा। मगर वहाँ के बोर्डिंग में आठवीं कक्षा से नीचे लेने का नियम नहीं था अत: काफी प्रयत्न करने पर भी जब प्रवेश नहीं मिला तो ८ दिन के बाद ही आपको बड़े भाई घर वापिस भेज गये, और घर पर अंग्रेजी की पढ़ाई की कोई व्यवस्था न होने से २ वर्ष यों ही बर्बाद गये।

वि॰ सं॰ १९७४ में महावीर दि॰ जैन संस्कृत महा विद्यालय साढूमल संस्था का जन्म हुआ और उसमें इन्हें भर्ती कर दिया गया।

सं॰ १९७५ में ही सारे भारत व्यापी इन-फ्लूएंजा के दौर में बड़ी भाभी का अचानक स्वर्गवास हो गया, तब संस्था के संस्थापक जी ने बड़ी सहानुभूति पूर्वक स्थानीय होते हुए भी छात्रावास में रहने और भोजन करने

की सुविधा प्रदान की। आप अग्रिम वर्ग के छात्रों में थे। चार वर्ष तक आपने इसमें पढ़ा और विशारद तृतीय खण्ड तक के सर्व विषयों के साथ न्याय मध्यमा भी पास की। संस्थापक जी कहा करते कि हीरालाल और किशोरी लाल (साले के लड़के) को एम० ए० और आचार्य परीक्षा तक पढ़ावेंगे। मगर आपके भाग्य में लिखा नहीं था। अतः नये वर्ष के प्रारम्भ में ही संस्थापक जी का सहसा स्वर्गवास हो गया और आप अपने बड़े भाई के आग्रह से इन्दोर चले गये। वहाँ दो वर्ष रहकर शास्त्रीय और न्यायतीर्थ परीक्षा पास की। अभी भी आप बहुत छोटे थे, और अंग्रेजी पढ़ने का भूत सवार था, अतः न्यायतीर्थ का परीक्षाफल प्रकट होने पर आपने इन्दोर संस्था के

मंत्री को अंग्रेजी विभाग में भर्ती होने के लिये लिखा। वहाँ से सखेद उत्तर आया- तुमने पहले प्रार्थना पत्र क्यों नहीं भेजा, अब तो सब स्थान भरे जा चुके हैं, तब आपके मझले भैया ने सिद्धान्त ग्रन्थों के विशेष अध्ययन के लिये जबलपुर शिक्षा मंदिर में भेजा - जो उसी समय खुला था और सिद्धान्त ग्रन्थों के प्रकाण्ड विद्वान पं. वंशीधर जी न्यायालंकार वहाँ चले गये थे। लगभग ८ मास वहाँ रहे और त्रिलोकसार, पंचाध्यायी आदि उच्च सिद्धान्त ग्रन्थों को पढ़कर उत्तीर्णता प्राप्त की। इस समय आपकी आयु केवल १८ वर्ष की ही थी और मझले भैया का आग्रह था कि यदि अंग्रेजी नहीं पढ़ सके - तो आचार्य तो बनना ही चाहिये। फल स्वरूप आप आचार्य बनने के लिये स्याद्वाद महा विद्यालय काशी

पहुँचे। भाग्य से वहाँ धर्माध्यापक का स्थान रिक्त था अतः पहुँचने के तीन दिन बाद ही मंत्री और अधिष्ठाता जी की प्रेरणा से आपने उस संस्था को सम्भाल लिया और अध्या-पन करते हुए ही आचार्य परीक्षा की तैयारी करने लगे। मगर देव को आचार्य बनना भी अभीष्ट नहीं था, अतः लगभग ६ मास कार्य करते हुए बीते ही थे कि १७ नवम्बर सन् १९२४ की रात को ११ बजे मझले भै की सख्त बीमारी का तार मिला। आप तुर ही रवाना हो गये, पर घर पहुँचने के १ घं पूर्व ही मझले भैया स्वर्गवासी हो चुके थे। फल स्वरूप आप बनारस नहीं लौट सके और इसी संस्था के (श्री महावीर दि० जै संस्कृत महा विद्यालय साढूमल) तात्कालिक संचालक श्री मान् सेठ चन्द्रभान जी के आग्र

पर संस्था में अध्यापन करने लगे।

पूरे तीन वर्ष आपने अकेले ही बड़ी योग्यता और तत्परता से संस्था को सम्भाला मगर संचालक जी से मकान बनाने पर कुछ अनबन हो जाने से आप भा. व. दि. जैन महा विद्यालय में धर्माध्यापक बनकर व्यावर चले गये। पूरे ४ वर्ष तक आपने प्रवेशिका से लेकर शास्त्रीय तक के धर्म शास्त्र को पढ़ाया - साथ ही श्वेताम्बर संस्था में न्यायतीर्थ तक के छात्रों को न्याय पढ़ाया। यहाँ पर श्वेताम्बर-आगमों के परिचय में आने से प्राकृत भाषा का भी आपने विशेष रूप से अध्ययन और अध्यापन किया।

सन् १९३३ के प्रारम्भ में आप विनोद मिल्स के मालिक राव जैन जाति भूषण सेठ लाल चन्द जी के विशेष आग्रह

पर उज्जैन चले गये। यहाँ आपेका समय खूब मिला - साथ ही सेलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन झालरापाटन से सम्पर्क भी कायम हुआ। पाटन रहते हुए आपने श्री धवल सिद्धान्त का स्वाध्याय प्रारम्भ किया और धीरे धीरे आपने चिरकालीन स्वप्न को साक्षात करने के लिये उसका अनुवाद भी प्रारम्भ कर दिया - जिसे वे बहुत वर्ष पहले देखे हुए थे और कसाय पाहुड सुत्त के सम्पादकीय में जिसका आपने उल्लेख किया है।

इन्हीं दिनों अमरावती से पं० हीरालाल जी ने जय धवल सिद्धान्त का एक पत्र का प्रारम्भिक अंश सम्पादन कर उसे मुद्रित कर विद्वानों की सम्मति के लिये उनके पास भेजा - उसपर बहुत टीका टिप्पणी हुई

और लोगों ने सुझाया कि पहले क्रम प्राप्त धवल सिद्धान्त का प्रकाशन होना चाहिये आप वर्षों से उसके ~~का~~ अनुवाद में संलग्न थे ही; और इस बात का पता स्व० श्री नाथूराम जी प्रेमी बम्बई को था। फलस्वरूप उनके मार्फत प्रो० साहब से सम्पर्क स्थापित हुआ और अपना सब सम्पादित अनुवाद लेकर आप अमरावती चले गये। बड़ी लगन के साथ वहाँ ३ वर्ष में ५ भागों का सम्पादन किया। छठे भाग के सम्पादन काल में प्रो० साहब से सम्पादन-सम्बन्धी बात को लेकर कुछ मनमुटाव हो गया और आपने सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

तदन्तर आपने जय धवल सिद्धान्त की प्रेस कापी तैयार की जिसका श्लोक प्रमाण ६० हजार है उसे १० रिम कागज पर लिखा।

पं० हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री

पौने दो वर्ष के बच्चे को छोड़कर जब माँ राजरानी का स्वर्गारोहण हुआ तो श्रीमान् दरयावलाल जी (बालक के पिता) का हृदय टुक-टुक हो गया। बालक के बड़े भाई एवं भावज के कानों में मरणासन्न माँ के शब्द तब भी गूँज रहे थे, "बेटी तू माँ की अन्तिम निशानी है आज से भाव होने के साथ ही साथ तू इसकी माँ भी है।

और बहुरानी ने ज्योंही शिशु को पर्यङ्कशायी माँ के पार्श्व से उठाया था त्यों ही माँ का सिर लटक गया। उस दिन किसी ने कल्पना तक नहीं की थी कि मातृविरहित वह अबोध शिशु एक दिन भारत की चोटी के विद्वानों में गिना जायगा।

मातृ सुखवञ्चित बालक सबको आँखों का तारा बना। दिन प्रतिदिन चाँद की तरह कान्ति एवं वृद्धि को प्राप्त होता

गया। छः वर्ष के वय में बालक को विद्यार्जन हेतु शिक्षालय में प्रविष्ट कराया गया। वहाँ भी वह छात्रों का सम्मान पात्र एंव गुरुजनों का स्नेह भाजन बना। उच्च शिक्षा प्राप्त करता हुआ वही शिशु आज भारत के गौरव गुम्फित विद्वान् पं० हीरालाल जी के नाम से हमारे समक्ष आया।

श्रावण कृष्णा ३०सं० १९६१ में आपका जन्म परवार जाति में हुआ। आपका जन्म स्थान साढूमल है। उ० प्र०(ललितपुर) आपको जीवन में अनेक दुःखों के मुँह देखने पड़े सं०१९७५ में आपकी बड़ी भावजका भी देहावसान हो गया। अनकी उस असामयिक मृत्यु से परिवार संकटाक्रम हो गया। उस समय आप स्थानीय महावीर दिगम्बर जैन पाठशाला में विशारद द्वितीय खण्ड के छात्र थे। आपको कौटुम्बिक

परिस्थिति से द्रवित होकर स्वनामधन्य, उभय संस्था-संस्थापक स्व० सेठ लक्ष्मीचंद्रजी ने आपको छात्रावास में रख लिया जिससे आप निराकुल हो आगे की पढ़ाई जारी रख सके। आपने स्व० हु० वि० जैन विद्यालय इंदौर से धर्मशास्त्री, न्यायतीर्थ एवं साहित्य शास्त्री की परीक्षाएं उत्तीर्ण की इसके बाद जैन शिक्षा मंदिर जबलपुर से सिद्धान्त शास्त्री किया।

अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त आपने सन् १९२७ से १९३८ तक अनेकों संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया और इसके पश्चात् १९३९ से आप ग्रन्थ सम्पादन कार्य कर रहे हैं। आपके अनुवादित एवं सम्पादित ग्रन्थों में से षट्खण्डागम (धवलसिद्धान्त) भाग १,२,३,४,५ एवं ६, कसायपाहुड सुत्त, पञ्च संग्रह, कर्मप्रकृति वसुनन्दीश्रावकाचार, जिन सहस्रनाम,

जैन धर्मामृत, प्रमेय रत्नमाला, दयोदय सुवर्णोदय, वीरोदय, छहढाला एवं द्रव्यसंग्रह श्रावकाचार संग्रह ~~तीन~~ 5 भाग आदि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त अभी तक विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपके लगभग २५० निबन्ध भी प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी अप्रकाशित रचनायें निम्न प्रकार हैं।

१- कुन्दकुन्दाचार्य के समस्त ग्रन्थों की गाथाओं का दोहानुवाद। २- सावय-धम्म दोहा का हिन्दी दोहानुवाद। ३- पाहुड दोहा का हिन्दी दोहानुवाद। ४- पुरुषार्थानुसानका हिन्दी अनुवाद। ५- परमागम सारका हिन्दी अनुवाद। ६- परमात्म प्रकाशका दोहानुवाद।

अमरावती में हिन्दी माध्यम से मांटेसरी शिक्षण पद्धति से बच्चों को पढ़ा

हेतु कोई संस्था नहीं थी। इस समस्या की ओर जब आपका ध्यान आकृष्ट हुआ तो आपने सर्वप्रथम वहीं अपना मकान बनवाया और इसके उपरान्त उसका नाम बाल मन्दिर रख करके १९५२-५३ में उसका संचालन किया। उस संस्था की व्यवस्था देखकर छोटे बालक इतने प्रभावित हुये कि प्रातः ८ बजे आकर सायं काल के ५ बजे तक भी घर जाने का नाम नहीं लेते थे। शिक्षण-पद्धति नूतन ढंग की थी। मध्यावकाश वेला में बच्चों को दूध व फल देने की व्यवस्था थी किन्तु जब आप वहाँ से चले आये तब वह संस्था दूर गयी।

आपके रुचि के सम्बन्ध में एक बात बताना अत्यनिवार्य है। वह यह है कि पुस्तकों से जितना स्नेह आपको है शायद

ही किसी को है। पुस्तक संग्रह का यह शौक आपको गुरु प० घनश्यामदासजी से अध्ययन ~~में~~ काल में ही मिला था जो आज तक उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान है। आपके संग्रह लय में लगभग ढाई हजार पुस्तकें हैं। आपका नारा है कि फटे वस्त्र पहिनकर भी नई पुस्तक खरीदो।

आप एक सम्पन्न परिवार के सुखिया हैं। आपका प्रथम विवाह विवाह सन् १९२५ में हुआ था किन्तु दुखद विषय है कि आपकी धर्मपत्नी का प्रसूति की गड़बड़ी से १९३५ में निधन हो गया तब आपका दूसरा विवाह हुआ। आपकी द्वितीय धर्मपत्नी का नाम चिन्तामणि है आपके पाँच पुत्रियाँ एवं छह पुत्र वर्तमान हैं। जिनमें से सभी

कुशल एवं प्रतिभा सम्पन्न तथा उच्च पदों पर हैं। आपके कुटुम्ब में ७ विद्वान पण्डित हुए आपका ज्येष्ठ पुत्र तो अमेरिका में विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। वीर निर्माण शताब्दी पर आपको विद्वत् समाज का २५ सौ रुपये का सम्मानित पुरस्कार मिला। वस्तुतः आप एक उच्चकोटि के विद्वान, प्रभावोत्पादक प्रवचनकर्ता, कुशल सम्पादक, महानतम साहित्यकार अनुवादक एवं निबन्ध कार, समाज के कर्णधार एवं देश के गौरव हैं समाज को आपने बहुत कुछ दिया और निरन्तर देते चले जा रहे हैं।

5 फरवरी 1981 को आपका देहावसान हो गया।

अभिलाषा कामना

मुझे परम सन्तोष है कि असमय वय में मातृ-वियोग से दुखित एवं पितृ स्नेह से पालित मैं पूर्ण स्व-संचित बुद्धि एवं साधन से संचित मैं अपने [illegible] नैतिक, कौटुम्बिक एवं आर्थिक - सभी दृष्टियों से आपको सर्वप्रकार से सम्पन्न पा रहा हूँ।

मैंने बहुत पहले मृत्युभोज (तेरहवीं) के ऊपर लौकिक एवं आगमिक दृष्टि से एक लेख दिगम्बर जैन के विशेषांक में लिखा था - जिसका सार यह है कि पूर्व काल के लोग पहाड़ स्थानों में [illegible] रहा करते अपना कौटुम्बिक [illegible] सम्बन्ध [illegible] होते थे. जिस प्रकार पंचों की साक्षी से ब्याह का निर्णय हो आता [illegible] होते थे. उसी प्रकार [illegible] समाज का निमंत्रण करते, यथा शक्ति दान दिया करते थे - उस दिन समाज का [illegible] कालि-प्रभाव एवं कौटुम्बिक परिस्थितियों के कारण होते थे। मगर आजकल [illegible] सम्भव नहीं हो सकता [illegible] घर में ही [illegible] उस रीति से [illegible] का [illegible] तेरहवीं के [illegible] होकर [illegible] इस मृत्युभोज [illegible] के [illegible] हो जाती रही है. और आज मृत्युभोज, एवं पगड़ी के [illegible] युक्ति-प्रयुक्तियां दी जाती रही हैं. और आज के समर्थन एवं विरोध के पक्ष में अनेकों युक्ति-प्रयुक्तियां [illegible] मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज [illegible] भी दी जा रही है. उस [illegible] मैं [illegible] रहा हूँ और [illegible] छोड़ रहा हूँ? मैं [illegible] के अनुसार [illegible] उत्तराधिकारी भी [illegible] छोड़ रहा हूँ [illegible] छोड़कर, [illegible] के पालन-पोषण का दायित्व भी [illegible] इच्छाएं रही हैं - जिनमें से कुछ ये हैं -

मेरी बहुत समय से अनेकों इच्छाएं रही हैं - [illegible] और इसका नाम [illegible] 'साधुग्राम'

(1) [illegible], [illegible] आदर्शग्राम बने और इसका नाम [illegible] 'साधुमठ' [illegible] 'सन्तवाला', [illegible] के सूचक हों - वस्तुतः इसका असली नाम 'साधुमठ' [illegible] है. मैंने अपनी इस कामना को [illegible] और [illegible] (मैंदपुर) को भी नामों से भी [illegible] से [illegible] नहीं [illegible] ग्राम-[illegible], ग्राम-प्रधान एव अन्य अनेक प्रमुख व्यक्तियों के [illegible] विचार करें - [illegible] व्यक्तियों के एवं अज्ञात [illegible] व्यक्तियों के [illegible] से कुछ [illegible] करें। मैं अब भी चाहता हूँ कि [illegible] इस गाँव को आदर्शग्राम बनाने का प्रयत्न करें। और [illegible] मैं तो इस गांव को [illegible] और [illegible] भी [illegible] आयें [illegible]

(2) मेरी [illegible] एक चिकित्सालय, वाचनालय और [illegible] भी थी, अभी भी मेरी [illegible] कुछ [illegible] हो : [illegible] कुछ प्रमुख व्यक्तियों से इस [illegible] के इस अवसर पर कुछ [illegible] [illegible] तैयार हों तो 4000 की [illegible] कुछ व्यक्तियों से [illegible] कहा कि [illegible] यदि आप लोग इसे [illegible] 4000 औषधालय के लिए देता हूँ [illegible] कार्य किया जाये, यदि आप लोग इसे [illegible] चिकित्सालय के लिए एवं 4000 [illegible] अपनी इच्छापूर्ति [illegible] साहित्य में [illegible] नहीं हो सका - तो अपनी इच्छापूर्ति [illegible] तैयार हूँ [illegible] पूर्ण करूँगा।